I.C.S.E

कक्षा : 10

हिंदी – 2015

समय: 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

Answers to this Paper must be written on the paper provided separately.

You will not be allowed to write during the first 15 minutes.

This time is to be spent in reading the question paper.

The time given at the head of this Paper is the time allowed for writing the answers

---

This Paper comprises of two sections ; ***Section A*** *and* ***Section B.***

Attempt ***All*** *the questions from* ***Section A.***

Attempt any ***four*** *questions from* ***Section B****, answering at least* ***one*** *question each from the* ***two*** *books you have studied and any* ***two*** *other questions.*

The intended marks for questions or parts of questions are given in brackets [ ].

SECTION – A (40 Marks)

Attempt all questions

Q.1 Write a short composition in Hindi of approximately 250 words on any one of the following topics : [15]

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर हिंदी में लगभग 250 शब्दों में संक्षिप्त लेख लिखिए:

(i) 'विश्वासपात्र मित्र जीवन की एक औषध है।' कथन के आधार पर बताइए कि मानव के जीवन में मित्रों का क्या महत्व है? वे किस प्रकार व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करते हैं? आप अपने मित्र का चुनाव करते समय

Downloaded From www.icseboard.org

उसमें किन गुणों का होना आवश्यक समझेंगे? अपने विचार स्पष्टतः लिखिए।

मित्रता

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में हर व्यकित के अनेक सम्बन्ध होते हैं। परस्पर सहयोग से रहना मानव का स्वभाव है। उसका सही स्वभाव मित्रता को जन्म देता है।

मित्रता एक अनमोल धन है। आज के युग में युग में सच्चा मित्र पाना स्वर्ग को पा लेने के समान है। सच्चा मित्र वह होता है, जो हमें अच्छे व बुरे का अहसास करवाए, साथ ही हमें कुमार्ग से सुमार्ग पर ले जाए। मित्रता में वह शक्ति है, जो बड़ी से बड़ी समस्या का समाधान कर सकती है। मित्रता में मनुष्य एकदूसरे का साथ देता है।-

हर व्यक्ति को मित्र की आवश्यकता होती है। वह अपने दिल की हर बात निर्भयता से केवल अपने मित्र से कह सकता है। सच्चा मित्र अपने मित्र के सुख दुख मानता है।-दुख को अपना सुख-

रहीम जी ने कहा है -

"कह रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत

बिपत्तिकसौटी जे कसे-, तेई साँचे मीत।।"

अंग्रेजी कहावत के अनुसार सच्चा मित्र वही हैजो समय पर काम आए। , कृष्णस्वार्थ एवं पवित्र थी।यह सच्ची मित्रता का :सुदामा की मित्रता नि- अनुपम उदाहरण है।

हमें चाहिए कि जब भी किसी को अपना मित्र बनाए तो सोच विचार कर- बनाए क्योंकि जहाँ एक सच्चा मित्र आपका साथ देकर आपको ऊँचाई तक पहुँचा सकता है,वहीं कपटी मित्र अपने स्वार्थ के लिए आपको पतन के रास्ते पर ले जाता है।

संत कबीर कहते हैं कि -

Downloaded From www.cbseboard.org

"कपटी मित्र न कीजिए, पेट पैठि बुधि लेत।
आगे राह दिखाय के, पीछे धक्का देति।।"
कपटी आदमी से मित्रता कभी न कीजिए क्योंकि वह पहले पेट में घुस कर सभी भेद जान लेता है और फिर आगे की राह दिखाकर पीछे से धक्का देता है।
'कबीर तहां न जाईय, जहां न चोखा चीत।
परपूटा औगुन घना, मुहड़े ऊपर मीत।'
ऐसे व्यक्ति या समूह के पास ही न जायें जिनमें निर्मल चित्त का अभाव हो। ऐसे व्यक्ति सामने मित्र बनते हैं पर पीठ पीछे अवगुणों का बखान कर बदनाम करते हैं।
अतक्योंकि सच्चा मित्र ,समझकर करना चाहिए-मित्र का सही चुनाव सोच: हमारी सफलता की कुँजी होता है।

(ii) भारतीय संस्कृति में 'अतिथि को देवता के समान माना जाता है।' वर्तमान परिस्थितियों में यह मान्यता कहाँ तक सत्य के रूप में दिखाई दे रही है? अतिथि कब बोझ बन जाता है और किस प्रकार? विचारों द्वारा समझाइए।

"अतिथि देवो भवः"

हमारे पूर्वजों का मानना था कि वे लोग बहुत भाग्यवान होते हैं जिनके घर मेहमान आते हैं। तभी तो यहाँ की संस्कृति में लिखा गया है कि 'अतिथि देवो भवः'। भारत संस्कृति और परंपराओं का देश है। यहाँ लोग परंपराओं का विशेष आदर करते हैं। भारत एक ऐसा देश है जिसमें एक नहीं अनेकों विशेषताएँ हैं।फिर चाहे वो अपनत्व की भावना हो, फिर चाहे वो रिश्तों का मान सम्मान हो, सब कुछ अपने आप में विशाल है। इन सब के अलावा एक और परंपरा है हमारे देश में जो युगों-युगों से चली आ रही है, और आज भी चल रही है और वो परम्परा है, "अतिथि देवो भवः" की ! अतिथि को भगवान के समान पूज्यनीय समझा जाता है। भगवान श्रीकृष्ण का सुदामा का आतिथ्य सत्कार करना अतिथि देवोभव का उत्तम उदाहरण हैं। -

Downloaded From www.icseboard.org

श्रीकृष्ण जिस तरह अतिथि सुदामा का नाम सुनते ही नंगे पाँव उनके दर्शन के लिए अकुलाते हुए पहुँचते हैं, घायल पैरों को अपने हाथ से धोकर कृष्ण अपनी महानता दिखाते हैं। टूटे तंदुल को सुदामा से माँग कर जितनी आत्मीयता में भगवान फाका मारते हैं, अपने आप में अवर्णनीय है।

संसार के प्रत्येक व्यक्ति का हिदुस्तान में इतना भावभीना स्वागत किया जाता है। इस लिए आज देश सरकार हम सभी को सिर्फ एक बात बार-बार रट्टू तोते की तरह याद करवा रही है कि, "अतिथि देवो भवः" देश में आने वाले सभी विदेशी मेहमानों का हमें ध्यान रखना चाहिए, उनसे हमारी रोजी रोटी चलती है, वह देश की अर्थव्यवस्था में बहुत सहयोग करते हैं !

वर्तमान परिस्थितियों में शहरीकरण,घर के स्त्री-पुरुष का कामकाजी होना तथा एकल परिवारों का चलन बढ़ने के कारण भी हमारी इस परंपरा का निर्वाह नहीं हो पा रहा है। लोगों का संयुक्त परिवारों से अलग होना भी हमारी इस अतिथि देवो भव की संस्कृति को शने-शने भूलने का कारण बनता जा रहा है क्योंकि पहले सब लोग गाँवों में एक साथ में रहते थे, इसलिए खर्च का बोझ भी साझे होता था, जगह की कोई कमी नहीं होती थी, आवागमन की इतनी सुविधा न होने के कारण मेहमान भी साल छः महीने में ही आ पाते थे इसलिए अतिथियों का आना उत्साह और आनंद का कारण होता था परन्तु आज के परिवेश में महँगाई इतनी बढ़ गई है कि अपना तथा अपने परिवार का पेट भरना ही मुश्किल होता जा रहा है, रहने की जगह की कमी हो गई है। वहाँ पर अतिथि के आने की कल्पना से मनुष्य का हृदय काँपने लगता है। वर्तमान परिवेश सभी चाहते हैं कि वे भी आनंद के साथ हँसी ख़ुशी मेहमानों के साथ अपना समय व्यतीत करें परन्तु बढ़ता खर्च और कम आमदनी और महँगाई से सामंजस्य न बिठा पाने के कारण हम अतिथि देवो भव परंपरा का पालन चाह कर भी नहीं कर पा रहे हैं।

Downloaded From www.cbseboard.org

(iii) स्वच्छता हम सभी के लिए लाभदायक है, यदि आपको स्वच्छ भारत अभियान में सहयोग देने के लिए कोई तीन कार्य करने के लिए कहा जाए तो आप किन कार्यों को करना पसन्द करेंगे तथा क्यों? अपने विचारों द्वारा स्पष्ट कीजिए।

स्वच्छता

स्वस्थ जीवन जीने के लिए स्वच्छता का विशेष महत्व है। स्वच्छता अपनाने से व्यक्ति रोग मुक्त रहता है और एक स्वस्थ राष्ट्र निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है। अत: हर व्यक्ति को जीवन में स्वच्छता अपनानी चाहिए और अन्य लोगों को भी इसके लिए प्रेरित करना चाहिए। लोगों व बच्चों को खुले में शौच नहीं जाना चाहिए क्योंकि इससे अनेक बीमारियाँ जैसे हैजा, पेचिस, पोलियों, टाइफाईड जैसी घातक बीमारियाँ फैलती हैं। खाने से पहले हाथों को साबुन से धोने जैसी छोटी-छोटी बातों को ध्यान में रखकर व्यक्ति स्वस्थ रह सकता है। व्यक्तिगत व सामुदायिक स्तरों पर रोग मुक्त रहने के लिए उचित स्वच्छता बहुत जरूरी है। भारत में, विशेषकर गरीबों व ग्रामीणों में, स्वच्छता की उचित सुविधाएँ न होने के कारण बहुत से रोग होते हैं। लोगों को उचित स्वच्छता सुविधाएँ उपलब्ध कराकर, इन रोगों की रोकथाम की जा सकती है, तथा कइयों को मरने से बचाया जा सकता है।

किसी भी देश के निर्माण तथा विकास में वहाँ के विद्यार्थी वर्ग का विशेष योगदान होता है।अत: यदि मुझे स्वच्छ भारत अभियान से सहयोग देने के लिए कोई तीन कार्य करने के लिए कहा जाए तो मैं निम्न तीन कार्यों को चुनूँगा ।

1.अपने घर में हर संभव स्वच्छता का ख़याल रखूँगा।हर कार्य की शुरुआत घर से ही होती है अत:मैं अपने घर में सबसे पहले इसकी शुरुआत करना

Downloaded From www.cseboard.org

चाहूँगा मैं सबसे पहले अपने से स्वच्छता का ख्याल रखूँगा और घरवालों को भी इसके लिए प्रेरित करूँगा।

2.मैं जहाँ रहता हूँ उस इमारत के आस-पास की स्वच्छता की ओर मोहल्ले वालों का ध्यान आकर्षित करूँगा। मैं अपने इन विचारों का प्रचार और प्रसार करूँगा जिससे मेरे साथ अन्य लोग भी जुड़ें और इस अभियान में अपना सहयोग दें।

3.मैं जिस विद्यालय में पढ़ता हूँ वहाँ पर मैं अपनी कक्षा से इसकी शुरुआत करूँगा। मैं स्वयं न गंदगी होने दूँगा और न करने दूँगा। मैं अपनी कक्षा के सहपाठियों को इसका महत्त्व समझाऊँगा। इस अभियान में मैं अपनी कक्षा-अध्यापक की भी सहायता लूँगा जिससे सभी बच्चे इस अभियान में शामिल हो जाए।

इस तरह स्व च्छ ता की तरफ बढ़ाए गए ये छोटे से कदम पूरे भारत देश को स्वतच्छव बनाने में मदद करेंगें।

(iv)एक कहानी लिखिए जिसका आधार निम्नलिखित उक्ति हो : -

'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।'

जीवन में सफलता-असफलता, हानि-लाभ, जय-पराजय के अवसर मौसम के समान है, कभी कुछ स्थिर नहीं रहता। मनुष्य के जीवन में पल-पल परिस्थितियाँ बदलती रहती है। जीवन में कई बार असफलता का सामना करना पड़ता है। असफलता में निराश होने की बजाए उत्साह से कार्य किये जाये तो असफलता को भी सफलता में बदला जा सकता है। अब्राहम लिंकन भी अपने जीवन में कई बार असफल हुए और अवसाद में भी गए, किन्तु उनके साहस और सहनशीलता के गुण ने उन्हें सर्वश्रेष्ठ सफलता दिलाई। आशावान व्यक्ति के आगे भाग्य भी घूटने टेक देता है।

Downloaded From www.rsboard.org

मुझे आज भी विद्यालय में हमारी शिक्षिका निर्मला वर्मा द्वारा इसी विषय पर सुनाई गई कहानी याद है। हुआ यूँ था कि हमारा फुटबॉल मैच था और हम सभी इसके लिए कुछ ज्यादा ही चिंतित थे। शिक्षिका ने जब हम सब बच्चों को इतना निरुत्साहित देखा तो उन्होंने हमें 1971 में हुए युद्ध की कहानी सुनाई कि किस तरह एक अकेले अफसर ने दुश्मनों से लोहा लिया। उस बहादुर अफसर ने दुश्मनों के दो विमानों को ध्वस्त कर दिया और बाकि बचे चार विमानों को लौटने के लिए मजबूर कर दिया। उन्होंने हमें हरिवंशराय बच्चन की चींटी कविता वाली यह पंक्तियाँ भी बताई कि "लहरों के डर से नौका पार नही होती, कोशिश करने वालों की हार नही होती। "

उनकी इस कहानी और कविता की पंक्तियों ने हमारे अन्दर एक नए उत्साह का संचार हुआ और हम दुगुने उत्साह और उस अफसर को याद कर अपनी तैयारी में लग गए। जब भी खिलाड़ी एक-दूसरे से मिलते तो वे यही कहते थे कि नामुमकिन कुछ भी नहीं।खेल का दिन नजदीक आया गया और हम सबने तन-मन से खेल को न केवल खेला बल्कि अच्छे स्कोर से जीत भी लिया।

इस प्रकार कह सकते हैं कि यह उक्ति 'मन के हारे हार है मन के जीते जीत' पूर्णतया सत्य है।

(v) नीचे दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और चित्र को आधार बनाकर वर्णन कीजिए अथवा कहानी लिखिए, जिसका सीधा व स्पष्ट सम्बन्ध चित्र से होना चाहिए।

Downloaded From www.icsecboard.org

उपरोक्त चित्र में हमें शालेय विद्यार्थी रास्ते पर सफाई करते हुए नज़र आ रहें हैं। यहाँ पर कुछ बच्चों के हाथ में झाड़ू हैं और वे तन्मन्यता से अपने सफाई का कार्य कर रहें हैं, कुछ बच्चे कचरे को जमा करने का कार्य कर रहे है और आने जाने वाले राहगीर इन विद्यार्थियों को बड़ी उत्सुकता से उन्हें देख रहें हैं।

इस चित्र को देखकर मुझे गांधी जयंती के अवसर पर हमारे माननीय प्रधानमंत्री द्वारा उनकी महत्त्वकांक्षी योजना स्वच्छ भारत अभियान की याद आ गई। प्रधानमंत्री मोदी ने इंडिया गेट से इस अभियान के शुरू करने के मौके पर फिल्म अभिनेता आमिर खान भी मौजूद थे पीएम ने इस मौके पर मौजूद लोगों को स्वमच्छकता की शपथ दिलाई और अपील की कि इस अभियान को राजनीति से नहीं जोड़ा जाए। नरेंद्र मोदी ने कार्यक्रम के दौरान क्रिकेटर और भारत रत्न सचिन तेंडुलकर और अभिनेता सलमान खान सहित नौ लोगों को सफाई अभियान से जुड़ने का न्यौता दिया। इसके बाद पीएम ने राजपथ से 'स्वच्छ भारत मिशन' पदयात्रा को हरी झंडी दिखाई।

Downloaded From www.icseboard.org

पीएम ने दिन की शुरुआत राजघाट और विजयघाट पर राष्ट्र पिता महात्माक गांधी और लाल बहादुर शास्त्री को श्रद्धा सुमन अर्पित कर की थी। इसके बाद वह वाल्मीकि मंदिर स्थित वाल्मीकि बस्ती में पहुँचे थे और झाड़ू लगाया था। यहाँ आने से पहले उन्होंने मंदिर मार्ग थाने का औचक निरीक्षण किया था। उन्होंने कहा कि एक भारतीय नागरिक होने की खातिर यह हमारी सामाजिक जिम्मेदारी है कि हम वर्ष में 2019 वीं जयंती मनाए जाने तक उनके स्वच्छ भारत के 150 महात्मा गांधी की सपने को पूरा करें।

प्रधानमंत्री ने देश की सभी पिछली सरकारों और सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक संगठनों द्वारा सफाई को लेकर किए गए प्रयासों की सराहना की। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि भारत को स्वच्छ बनाने का काम किसी एक व्यक्ति या अकेले सरकार का नहीं है, यह काम तो देश के 125 करोड़ लोगों द्वारा किया जाना है जो भारत माता के पुत्र-पुत्रियाँ हैं। उन्होंने कहा कि स्वच्छ भारत अभियान को एक जन आंदोलन में तब्दील करना चाहिए। लोगों को ठान लेना चाहिए कि वह न तो गंदगी करेंगे और न ही करने देंगे।

Q.2 Write a letter in Hindi in approximately 120 Words on any one of the topics given below : [7]

निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर हिंदी में लगभग 120 शब्दों में पत्र लिखिए :

(i) आपकी कॉलोनी में कुछ असामाजिक तत्त्व (Antisocial elements) आकर बस गए हैं। उनकी गुंडागर्दी बढ़ने के कारण नागरिकों का जीवन कठिन हो गया। अपने शहर के पुलिस कमिश्नर को पत्र लिखकर उनकी शिकायत कीजिए तथा सुव्यवस्था के लिए शीघ्र कदम उठाए जाने की प्रार्थना कीजिए।

सेवा में,

Downloaded From www.icseboard.org

पुलिस कमिशनर,

आजाद चौक,

चंडीगढ़

विषय:नगर में बढ़ते हुए असामाजिक तत्वों के विषय में शिकायती पत्र ।

महोदय

मैं माणिकपुर, आजाद चौक का निवासी हूँ। इस पत्र द्वारा में आपका ध्यान हमारे क्षेत्र में बढ़ते हुए अपराध की ओर दिलाना चाहता हूँ। हमारे यहाँ पिछले कुछ दिनों से कुछ असामाजिक तत्व आ गये हैं जिसके कारण हमारे क्षेत्र में अपराध की घटनाएँ बढ़ गई है। हर आए दिन कहीं न कहीं से चोरी और लूटमार की घटना सुनाई पड़ती ही रहती है जिसके कारण घरों को अकेले छोड़ना मुश्किल हो गया है, हर समय किसी न किसी को घर में रहना ही पड़ता है। इतना ही नहीं नगर में नशीले पदार्थों का विक्रय खुले आम हो रहा है। सड़कों और गलियों में बच्चों और महिलाओं का निकलना सुरक्षित नहीं रह गया है। बस-स्टॉप तथा चौराहे पर गुंडे किस्म के लोग छेड़-छाड़ करते पाए जाते हैं।

अत: आपसे अनुरोध है कि नगर की सुरक्षा को देखते हुए पुलिस की गश्त बढ़ाई जाए ताकि निवासी सुरक्षित महसूस कर सकें।

सधन्यवाद।

भवदीय

कमल शर्मा

2/42, सरला निवास,

आजाद चौक,

माणिकपुर,

चंडीगढ़

दिनाँक - 27 फरवरी 2015

Downloaded From www.cbseboard.org

(ii) आपका छोटा भाई किसी दूसरे शहर में पढ़ने गया है, जहाँ वह खेलने के लिए समय नहीं निकाल पा रहा है। खेलों का महत्त्व समझाते हुए उसे पत्र लिखिए।

102,मोहनगंज

गली नं -3

कानपुर

दिनाँक - 2 अगस्त 2014

प्रिय अनुज सौमिल

स्नेहाशीष।

चाचीजी का पत्र मिला बता रही थी कि तुम अध्ययन में तो सर्वोत्तम हो परन्तु तुम किसी भी प्रकार के खेल-कूद में भाग नहीं लेते हो। पूरे दिन बस पढ़ते रहते हो। न घर में खेलते हो न मित्रों के साथ बाहर खेलते हो। मैं मानता हूँ पढ़ना आवश्यक है परन्तु सिर्फ किताबी कीड़ा बनना भी ठीक नहीं। स्वयं को सिर्फ़ किताबों तक सीमित रखना अत्यंत खतरनाक है। खेलकूद हमारे विकास में कई प्रकार से सहायक होते हैं। खेलने से शारीरिक विकास होता है। मांसपेशियाँ मजबूत बनती हैं, भोजन ठीक तरह से पचने लगता है। खेलकूद बौद्धिक क्षमता में भी वृदधि करते हैं। प्राय: सभी खेलों से मानसिक एकाग्रता, निर्णय लेने की क्षमता और सूझबूझ का विकास होता है। शतरंज का खेल मष्तिष्क का सर्वश्रेष्ठ व्यायाम है। खेलों से बालक में धैर्य, क्षमा, सहिष्णुता आदि गुणों का विकास होता है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम खेलों का महत्त्व समझोगे। चाचाजी और चाचीजी को मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारा अग्रज

अमर

Downloaded From www.iceboard.org

Q.3 Read the passage given below and answer in Hindi the questions that follow, using your own words as far as possible :- [10]

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए तथा उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए। उत्तर यथासंभव आपके अपने शब्दों में होने चाहिए :-

कौशल देश के वृद्ध राजा के चार पुत्र थे। उन्हें यह चिन्ता सताने लगी थी कि राज्य का उत्तराधिकारी किसे बनाया जाए? सोच-विचार के बाद अपने चारों पुत्रों को बुलाकर राजा ने कहा - "तुम चारों में से जो सबसे बड़े धर्मात्मा को मेरे पास लेकर आएगा वही राज्य का स्वामी बनेगा।" तत्पश्चात चारों राजकुमार अपने-अपने घोड़ों पर सवार होकर चल पड़े।

कुछ दिनों बाद बड़ा पुत्र अपने साथ महाजन को लेकर आया और राजा से बोला - "ये महाजन लाखों रुपयों का दान कर चुके हैं, अनेक मन्दिर व धर्मशालाएँ बनवा चुके हैं तथा साधु-सन्तों और ब्राह्मणों को भोजन कराने के उपरान्त ही ये भोजन करते हैं। इनसे बड़ा धर्मात्मा कौन होगा?

"हाँ, वास्तव में ये धर्मात्मा हैं।" राजा ने कहा तथा सत्कारपूर्वक विदा किया।

इसके बाद दूसरा पुत्र एक कृशकाय ब्राह्मण को लेकर आया और राजा से बोला - "ये ब्राह्मण देवता चारों धामों की यात्रा कर आए हैं, कोई तामसी वृत्ति इन्हें छू नहीं गई है। इनसे बढ़कर कोई धर्मात्मा नहीं है।"

राजा ब्राह्मण के समक्ष नतमस्तक हुए और दान-दक्षिणा देकर बोले - "इसमें कोई सन्देह नहीं कि ये एक श्रेष्ठ धर्मात्मा हैं।"

तभी तीसरा पुत्र एक साधु को लेकर पहुँचा और बोला - "ये साधु महाराज सप्ताह में केवल एक बार दूध पीकर रहते हैं। भयंकर सर्दी में जल में खड़े रहते हैं और गर्मी में पंचाग्नि तापते हैं। ये सबसे बड़े धर्मात्मा हैं।"

राजा ने साधु को प्रणाम किया और कहा - "निश्चय ही ये एक उत्तम साधु हैं।" साधु महाराज राजा को आशीर्वाद देकर विदा हुए।

Downloaded From www.cbseboard.org

अन्त में सबसे छोटा पुत्र एक निर्धन किसान के साथ आया। किसान दूर से ही भय के मारे हाथ जोड़ता चला आ रहा था। तीनों भाई छोटे भाई की मूर्खता पर ठहाका लगाकर हँस पड़े। छोटा पुत्र बोला - "एक कुत्ते के शरीर पर लगे घाव को यह आदमी धो रहा था। पता नहीं कि यह धर्मात्मा है या नहीं। अब आप ही इससे पूछ लीजिए।"

राजा ने पूछा - "तुम क्या धर्म-कर्म करते हो?" किसान डरते-डरते बोला - "मैं अनपढ़ हूँ, धर्म किसे कहते हैं, यह मैं नहीं जनता। कोई बीमार होता है तो सेवा कर देता हूँ। कोई माँगता है तो मुट्ठी भर अन्न अवश्य दे देता हूँ।"

राजा ने कहा - "यह किसान ही सबसे बड़ा धर्मात्मा है।" राजा की बात सुनकर तीनों बड़े लड़के एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। राजा ने पुनः कहा - "तीर्थयात्रा करना, भगवत आराधना में लीन रहना, दान-पुण्य करना और जप-तप करना भी धर्म है किन्तु बिना किसी स्वार्थ के किसी दीन-दुःखी और कष्ट में पड़े हुए प्राणी की सेवा करना सबसे बड़ा धर्म है। जो परोपकार करता है, वही सबसे बड़ा धर्मात्मा है।"

1. राजा को क्या चिन्ता थी? उसने अपने पुत्रों को बुलाकर क्या कहा? [2]

उत्तर : कौशल देश के वृद्ध राजा के चार पुत्र थे उन्हें यह चिंता सताने लगी थी कि चारों पुत्रों में से किसे राज्य का उत्तराधिकारी बनाया जाए काफ़ी सोच-विचार के बाद राजा ने अपने पुत्रों को बुलाया और कहा कि उन चारों में से जो कोई सबसे बड़े धर्मात्मा को उनके पास लाएगा उसे राज्य का उत्तराधिकारी बना दिया जाएगा।

2. बड़े पुत्र की दृष्टि में सबसे बड़ा धर्मात्मा कौन था और उसका क्या कारण था? [2]

उत्तर : बड़ा पुत्र अपने साथ एक महाजन को ले आया उसके अनुसार वह महाजन सबसे बड़ा धर्मात्मा था क्योंकि वह लाखों रूपए दान कर चुके थे, अनेक मंदिर और धर्मशालाओं का निर्माण कर चुके थे और

Downloaded From www.icseboard.org

साधु-संतों को भोजन करवाने के उपरान्त ही वे स्वयं भोजन करते थे।

3. साधु किसके साथ आया था? उसका परिचय किस प्रकार दिया गया? [2]

उत्तर : साधु राजा के तीसरे बेटे के साथ आया था। उनका परिचय इस प्रकार दिया गया कि वे सप्ताह में एक बार दूध पीकर रहते हैं, भयंकर सर्दी में जल में खड़े रहते हैं और गर्मी में पंचाग्नि तापते हैं।

4. किसान को राजा के सामने कौन लाया था और क्यों? राजा ने किसान को ही सबसे बड़ा धर्मात्मा क्यों कहा? [2]

उत्तर : किसान को राजा के सामने उनका सबसे छोटा पुत्र धर्मात्मा के रूप में लाया। राजा ने उस किसान को धर्मात्मा मानने का कारण यह था कि वह निस्वार्थ भाव से दीन-दुखी की मदद करता था और राजा के अनुसार परोपकार करना ही सबसे बड़ा धर्म था।

5. प्रस्तुत गद्यांश से क्या शिक्षा मिलती है? [2]

उत्तर : इस गद्यांश से सच्चे धर्म की शिक्षा मिलती है। धर्म तीर्थयात्रा करने, दान-पुण्य करने या जप-तप करने में नहीं होता है। सच्चा धर्म तो निस्वार्थ भाव से दीन-दुखियों की सेवा और परोपकार में होता है।

Q.4

Answer the following according to the instructions given:

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार लिखिए : -

1. निम्नलिखित शब्दों से विशेषण बनाइए : - [1]

- पूजा - पूजनीय
- धर्म - धार्मिक

Downloaded From www.iseboard.org

2. निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए : [1]

- राजा - नरेश, नृप
- जलाशय - सर, तालाब, पोखर

3. निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं दो शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए : [1]

- निर्माण - ध्वंस
- क्रोध - शांत
- देहाती - शहरी
- मूर्खता - होशियारी

4. भाववाचक संज्ञा बनाइए : - [1]

- साधु - साधुता
- तपस्वी - तप

5. निम्नलिखित मुहावरों में से किसी एक की सहायता से वाक्य बनाइए : [1]

- कान का कच्चा - कान की कच्ची मंजु ने पड़ोसियों की बातों में आकर अपने बेटे की नाहक पिटाई कर दी।
- श्रीगणेश करना - मोदी जी के द्वारा स्वयं झाड़ू लगाकर स्वच्छता अभियान का श्री गणेश किया गया।

6. कोष्ठक में दिए गए निर्देशानुसार वाक्यों में परिवर्तन कीजिए : -

(a) कश्मीर में अनेक दर्शनीय पर्यटक स्थल देखने योग्य हैं। [1]

(वाक्य को शुद्ध कीजिए।)

उत्तर : कश्मीर में अनेक दर्शनीय पर्यटक स्थल हैं।

(b) मैं कलम से लिखूँगा। [1]

(वाक्य को भूतकाल में बदलिए)

Downloaded From www.icseboard.org

उत्तर : मैं कलम से लिखता था।

(c) आप <u>परिवार के साथ</u> हमारे घर आइएगा। [1]

(रेखांकित के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग कीजिए)

उत्तर : आप <u>सपरिवार</u> हमारे घर आइएगा।

SECTION - B (40 Marks)

Attempt four questions from this section.

You must answer at least **one** question from each of **two** books you have studied and any **two** other questions.

(गद्य संकलन)

Q.5 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए:

" यों तो मैं कहीं आऊँ-जाऊँ सो ही इन्हें नहीं सुहाता, और फिर कल किशोरी के यहाँ बुलावा नहीं आया। अरे मैं तो कहूँ की घरवालों का कैसा बुलावा? वे लोग तो मुझे अपनी माँ से कम नहीं समझते, नहीं तो कौन भला यों भट्टी और भण्डार घर सौंप दे?"

- अकेली -

लेखिका - मन्नू भंडारी

1. किसे, किसका कहीं भी आना-जाना पंसद नहीं है तथा क्यों? [2]

उत्तर : सोमा बुआ के संन्यासी पति को उनका कहीं भी आना जाना पसंद नहीं था। संन्यासी जी सोमा बुआ के पति है। अपने एकलौते पुत्र की मृत्यु का उन्हें ऐसा सदमा लगा कि उन्होंने अपना घरबार ही छोड़ दिया। वे साल के ग्यारह महीने हरिद्वार में रहते है और एक महीने के लिए घर आते हैं। और इस एक महीने में भी उनका व्यवहार बुआ के प्रति उदासीन ही बना रहता है। बुआ के पति का

Downloaded From www.iosboard.org

यह कहना था कि वे बिना बुलावे के किसी के यहाँ न जाए। इसी कारण वे सोमा बुआ को कहीं भी आने जाने से मना करते हैं।

2. सोमा बुआ किशोरीलाल के घर किस आयोजन पर बिना निमंत्रण के ही चली गयी थीं? वहाँ उन्होंने किस प्रकार की अव्यवस्था देखी? [2]

उत्तर : सोमा बुआ किशोरीलाल के घर उसके बेटे के मुंडन में बिना निमंत्रण के ही चली गई थी।बुआ जब वहाँ पहुँचती है तो देखती है कि एक भी काम ठीक से नहीं हो रहा था। मुंडन गीत गाने के बजाए स्त्रियाँ विवाह के गीत गा रही थी, भंडारकार का हाल तो और भी बुरा था समोसे कच्चे और बहुत ज्यादा बना दिए गए और उसके विपरीत गुलाबजामुन बहुत ही कम बनाए गए थे।

3. बुलावा न आने पर भी सोमा बुआ ने किशोरीलाल के यहाँ क्या किया तथा वहाँ जाने का क्या तर्क दिया? आप इस तर्क से कहाँ तक सहमत हैं? अपने विचार दीजिए। [3]

उत्तर : बुलावा न आने पर भी बुआ किशोरीलाल के घर जाती है और उसके सारे बिगड़े हुए कामों को सम्भाल लेती है।

बुलावा न आने पर भी बुआ किशोरीलाल के यहाँ जाने का तर्क आपसी-प्रेम और अपनेपन को देती है। बुआ के अनुसार घर के शुभ-प्रसंगों में ढेर सारे काम होते हैं, ऐसे में अक्सर लोगों से निमंत्रण देने में भूल हो ही जाती है, और वैसे भी अपने लोगों को बुलाया नहीं जाता है, जहाँ प्रेम होता है वहाँ वे बिन बुलाए भी जाएँगी। मैं यहाँ पर बुआ के विचारों से पूरी तरह सहमत हूँ कि प्यार और अपनापन पराए को भी अपना बना लेता है।

Downloaded From www.icseboard.org

4. 'अकेलापन जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप है।' इस कहानी की घटनाओं के आधार पर स्पष्ट कीजिए। [3]

उत्तर : कहानी की मुख्य पात्र सोमा बुआ एक अकेली और वृद्धा स्त्री हैं। उसके पति पुत्र के देहांत के बाद से संन्यासी हो जाते हैं।वह वर्ष में ग्यारह माह हरिद्वार में रहते हैं और एक मास के लिए बुआ के पास रहते हैं परन्तु इन एक महीने में वे बुआ से स्नेह और अपनापन देने की बजाए बुआ की दिनचर्या में बाधा ही उत्पन्न करते हैं।बुआ अपना अकेलेपन पास-पड़ोस के सुख-दुःख में शामिल होकर उनके घर के आयोजनों में कठिन परिश्रम कर अपना जीवन बिताती है।बुआ हरसमय किसी न किसी आयोजन के होने की ख़ुशी से ही अपने अकेलेपन को बिताने का हर संभव प्रयास करती रहती है। पाठ में आई किशोरीलाल के बेटे के मुंडन और भागीरथी के बेटी का विवाह का संदर्भ बुआ के इसी अकेलेपन को दर्शाता है।

Q.6 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढिए तथा उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए :-

"आज देहाती लोग भी कहते हैं कि हमारे बच्चों को तालीम मिलनी चाहिए। तालीम किसलिए मिलनी चाहिए? इसलिए नहीं कि लड़का ज्ञानी बनेगा, धर्म-ग्रन्थ पढ़ सकेगा और जीवन में हर काम विचारपूर्वक करेगा। पर इसलिए कि लड़के को नौकरी मिलेगी और हम जैसे दिन भर खटते हैं, वैसे उसे खटना न पड़ेगा।"

- श्रम की प्रतिष्ठा -

आचार्य विनोबा भावे

1. काम के प्रति देहाती लोगों की मनोवृत्ति कैसी हो गई और क्यों? [2]

Downloaded From www.icseboard.org

उत्तर : काम के प्रति देहाती लोगों की मनोवृत्ति काम से बचने की हो गई है। देहाती लोग सोचने लगे हैं कि उनके बच्चे पढ़-लिखकर ऐसे काम में लगें, जहाँ शारीरिक काम न करना पड़े, ज्यादा मेहनत न करना पड़े। वे ऐसा इसलिए सोचते हैं ताकि उनके बच्चे उनकी तरह दिन भर शारीरिक श्रम न करते रहें। उनकी तरह सामाजिक प्रतिष्ठा से वंचित भी न रहें क्योंकि हमारे देश में श्रम करने वाले को सदैव निम्न श्रेणी का माना जाता है।

2. दिमागी काम करने वाले लोग मजदूरों के प्रति क्या विचार रखते हैं? [2]

उत्तर : हमारे समाज में श्रम की प्रतिष्ठा न होने के कारण दिमागी काम करने वाले लोग मज़दूरों को सदैव निम्न श्रेणी का समझते हैं। कम मज़दूरी पर ज्यादा काम लेना लोगों की आदत बन गई है।

3. लेखक ने मजदूरों की तुलना किससे की है तथा क्यों? समझाकर लिखिए। [3]

उत्तर : लेखक ने शेषनाग मजदूरों को माना है। पौराणिक शास्त्र कहता हैं कि यह पृथ्वी शेषनाग के मस्तक पर स्थित है। अगर शेषनाग का आधार टूट जाये तो पृथ्वी स्थिर नहीं रह सकती। मजदूर दिन-रात शारीरिक श्रम करके तरह-तरह की पैदावार करते हैं। मजदूर ही पृथ्वी का आधार है। इसी कारण भगवान ने मजदूरों को कर्मयोगी की संज्ञा प्रदान की।

4. प्रस्तुत निबन्ध का उददेश्य कीजिए। [3]

उत्तर : 'श्रम की प्रतिष्ठा' निबंध द्वारा विनोबा भावे जी ने मानव समुदाय को प्रेरित करना चाहा है कि श्रम के महत्त्व को जीवन में उतार कर उसकी प्रतिष्ठा करे। बिना काम किए भोजन ग्रहण करना

Downloaded From www.icseboard.org

भयानक पाप है। शारीरिक और मानसिक श्रम में भेदभाव नहीं करना चाहिए क्योंकि दोनों का महत्त्व समान है। अत: दोनों तरह के कार्यों के मूल्य समान होने चाहिए जिससे समाज में श्रम की प्रतिष्ठा हो सके और ऊँच-नीच का भेदभाव समाप्त हो सके।

Q 7 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए :-

"मैं नहीं जानती कि वह शहंशाह था या साधारण मुगल, पर एक दिन इसी झोपड़ी के नीचे वह रहा था। मैंने सुना था, कि वह मेरा घर बनाने की आज्ञा दे गया था। मैं आजीवन अपनी झोपड़ी खुदवाने के डर से भयभीत रही थी।"

- ममता -

जयशंकर प्रसाद

1. वक्ता का संक्षिप्त परिचय दीजिए। [2]

उत्तर : वक्ता 'ममता' कहानी की नायिका है। वह रोहतास के दुर्गपति के मंत्री चूड़ामणि की एकमात्र कन्या है। वह विधवा हो चुकी है। उसके पिता ने उसे बहुत स्नेह से पाला है। वह अत्यंत शांत, गम्भीर, ममतामयी और संस्कारों को मानने वाली देशभक्त स्त्री है।

2. कौन, किसका घर बनवाने की आज्ञा दे गया था तथा क्यों? [2]

उत्तर : ममता ने चौसा के युद्ध में पराजित हुमायूँ को अपनी झोंपड़ी आश्रय दिया था। उस उपकार का बदला चुकाने के लिए हुमायूँ ने अपने सेनापति मिर्जा को आदेश दिया था कि उस स्थान पर ममता के लिए एक घर बना दिया जाए।

Downloaded From www.rsaboard.org

3. झोपड़ी के स्थान पर वहाँ क्या बनाया गया और उस पर क्या लिखा गया? अपने शब्दों में लिखिए।बताइए कि वास्तव में वह स्थान किसके नाम का महत्त्व रखता है? [3]

उत्तर : ममता की झोंपड़ी के स्थान पर स्मारक के रूप में एक अष्टकोण मंदिर बनवाया गया जिस पर लगाए गए शिलालेख पर लिखा गया कि सातों देशों के नरेश हुमायूँ ने एक दिन वहाँ विश्राम किया था। उसके पुत्र अकबर ने उनकी स्मृति में वह गगनचुंबी मंदिर बनवाया है।

उस स्थान पर ममता के नाम का महत्त्व रखता था क्योंकि उस स्थान पर ममता की झोपड़ी थी इसलिए उस स्थान पर भी ममता का ही हक़ था उसने ही मुग़ल सम्राट हुमायूँ को आसरा दिया था। अत: वास्तव में यहाँ पर ममता के नाम का उल्लेख होना चाहिए था।

4. इस कहानी के माध्यम से लेखक ने हमें क्या संदेश देना चाहा है?]3[

उत्तर : प्रसादजी की सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक कहानी है 'ममता'। इसमें उन्होंने एक अभावग्रस्त विधवा ब्राह्मणी के माध्यम से भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठ साधनाओं का आदर्श प्रस्तुत किया है। ममता अभावों और कष्टों में जीना स्वीकार कर लेती है लेकिन परिस्थितियों से समझौता नहीं करती और न ही मुग़ल पर किए गए उपकार का बदला चाहती है। वह भारतीय संस्कृति की अतिथि देवो भव की भावना का निर्वाह करती है। इस कहानी का उद्देश्य शासक वर्ग की मनोवृत्ति को भी उजागर करना है। शासकों की एहसान चुकाने के लिए स्मारक बनाने के पीछे उनकी मंशा केवल प्रसिद्धि पाने की होती है।

Downloaded From www.icseboard.org

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य

लेखक - प्रकाश नगायच

Q.8 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए :

"मैं ही नहीं, मगध की सारी प्रजा जानती है कि जो कुछ भी रामगुप्त और उसके मंत्रियों ने किया है, गुप्त वंश की परम्परा और स्वर्गीय सम्राट समुद्रगुप्त की इच्छा और आज्ञाओं के विरूद्ध ही नहीं धर्म के विरुद्ध भी है।"

1. उक्त कथन का वक्ता और श्रोता कौन है? इससे पूर्व वक्ता श्रोता की किससे तुलना कर रहे थे और क्यों? [2]

उत्तर : यह कथन मगध के राजपुरोहित विष्णु शर्मा ने युवराज चन्द्रगुप्त से कहा है।

इस कथन से पूर्व विष्णु शर्मा युवराज चंद्रगुप्त की तुलना उनके पिता सम्राट समुद्रगुप्त से कर रहे थे। युवराज चंद्रगुप्त अपने स्वरुप तथा गुणों की दृष्टि से अपने पिता जैसे ही थे। वे अपने पिता की तरह ही वीर, साहसी एवं योग्य थे। जिस प्रकार पिता समुद्रगुप्त ने अनेक राज्यों पर विजय प्राप्त करके समस्त भारत को एक किया था उसी प्रकार की क्षमता तथा गुण युवराज चंद्रगुप्त में भी दिखाई दे रहे थे।

इस तुलना का कारण चंद्रगुप्त के स्थान पर रामगुप्त का बलपूर्वक राजसिंहासन पर अधिकार कर लेना था।

2. धर्म किसे कहते हैं? रामगुप्त के द्वारा किए गए कार्य को धर्म के विरुद्ध क्यों कहा गया है? [2]

उत्तर : नैतिक मूल्यों के मार्ग पर चलते हुए आचरण व कर्त्तव्य अपनाने को धर्म कहा जाता है। रामगुप्त ने एक साथ कई ऐसे कार्य किए,

Downloaded From www.icsebsord.org

जो धर्म के विरुद्ध थे। पिता समुद्रगुप्त की बीमारी की सूचना युवराज को देना अनिर्वाय था। रामगुप्त ने ऐसा न करके बलपूर्वक राजसिंहासन पर अधिकार कर लिया। चंद्रगुप्त को राजनीतिक अधिकार से वंचित करने के साथ ही वह उसकी मंगेतर ध्रुवस्वामिनी से भी बलपूर्वक विवाह कर लेता है जिसे चंद्रगुप्त मद्र देश से लाया था। इस प्रकार का कायर व अयोग्य व्यक्ति न तो राजा बनने के योग्य होता है और न पति बनने के। इसीलिए उसके कार्य को धर्म के विरुद्ध कहा गया है।

3. समुद्रगुप्त का परिचय देते हुए बताइए कि यहाँ उनकी चर्चा क्यों की जा रही है? [3]

उत्तर : समुद्रगुप्त मगध के चक्रवर्ती सम्राट थे। वे एक महान यशस्वी, कुशल, साहसी व पराक्रमी शासक थे। उन्होंने भारत के छोटे-छोटे राज्यों को जीतकर एक करने का मौलिक कार्य किया था। उन्होंने पश्चिम में तक्षशिला से लेकर पूर्व में ब्रह्मपुत्र तक तथा उत्तर में कश्मीर से लेकर दक्षिण में कृष्णा नदी की ओर फैले विभिन्न राज्यों पर अधिकार कर लिया था। वे वीरता, विवेक व दूरदर्शिता की सजीव मूर्ति थे। इसीलिए वे अपने बड़े पुत्र रामगुप्त की अयोग्यता तथा छोटे पुत्र चंद्रगुप्त की अपार योग्यता को पहचान जाते हैं और विवेकपूर्वक चंद्रगुप्त को ही युवराज नियुक्त करते हैं।

4. उपन्यास 'चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य' युद्ध प्रधान उपन्यास है। उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए।]3[

उत्तर : प्रस्तुत उपन्यास के लेखक 'श्री प्रकाश नगायच' जी हैं।

उपन्यासकार ने प्रस्तुत उपन्यास के प्रारंभ में ही इसकी ऐतिहासिक

Downloaded From www.icseboard.org

पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाल दिया है। इसके कथानक का मूल आधार विशाखदत्त का नाटक 'देवी चंद्रगुप्तम्' है। यद्यपि इस नाटक के कुछ अंश ही उपलब्ध हैं तथापि इसकी ऐतिहासिकता प्रमाणिक है। प्राप्त अंशों में ही कथानक की मूल घटनाओं का उल्लेख मिल जाता है। रामगुप्त के संबंध में ऐतिहासिक तथ्य मिलते हैं जिनसे ऐतिहासिक संदर्भों की पुष्टि होती है। चंद्रगुप्त द्वारा अपने अयोग्य अग्रज रामगुप्त का वध करके राज्य प्राप्त करना और उसकी विधवा ध्रुवस्वामिनी से विवाह करना भी ऐतिहासिक तथ्य है।

Q.9 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए:

"अगर हमने शकराज की माँगे पूरी न की तो सवेरा होते ही शकों की सेना हमें असहाय भेड़-बकरियों की तरह काट डालेगी।"

1. प्रस्तुत संवाद के वक्ता और श्रोता कौन हैं? संक्षिप्त परिचय दीजिए। [2]

उत्तर : प्रस्तुत संवाद का वक्ता रामगुप्त और श्रोता महामंत्री शिखरस्वामी है।रामगुप्त सम्राट समुद्रगुप्त का बड़ा पुत्र तथा चन्द्रगुप्त का बड़ा भाई है उसने धर्म और राजनीति के विरूद्ध राजसिंहासन पर अधिकार किया था। शिखरस्वामी राज्य का महामंत्री है। उसने रामगुप्त के राजा बनने के षडयंत्र में साथ दिया था और स्वयं प्रधान सेनापति बन बैठा।

2. शकराज की शर्ते क्या थी? वे शर्ते अपमानजनक क्यों थी? [2]

उत्तर : शकराज की शर्तों के अनुसार कश्मीर के साथ उसे पंजाब का प्रदेश भी दिया जाए और दोनों राज्यों की सीमा सतलुज नदी को

Downloaded From www.icseboard.org

माना जाए। साथ महादेवी और मगध के सामंतो की पत्नियों को उसके अत:पुर में भेज दिया जाए जाए।

वे शर्ते अपमानजनक थी क्योंकि मगध का साम्राज्य पुरवर्ती सम्राट ने कठिन संघर्ष के बाद स्थापित किया था उसे ऐसे बिना किसी संघर्ष के शकराज के हाथों सौंपना हो अपमानजनक था साथ ही नारियों को उसके अत:पुर भेजना न केवल मगध की महिलाओं का बल्कि संपूर्ण नारी जाति का अपमान था।

3. शकराज की शर्तो को पूरा करने में क्या कठिनाइयाँ हैं? समझाकर लिखिए। [3]

उत्तर : शकराज की शर्तों को पूरा करने में सबसे बड़ी कठिनाई समुद्रगुप्त की पत्नी स्वयं महादेवी है। क्योंकि शर्त के अनुसार उसे शकराज के पास अत:पुर में जाना होगा जिसके लिए वे बिल्कुल भी तैयार नहीं है।

4. उपर्युक्त सवांद की प्रतिक्रिया में श्रोता ने क्या विचार प्रस्तुत किए? आप इस विचार से कहाँ तक सहमत हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिए। [3]

उत्तर : उपर्युक्त संवाद की प्रतिक्रिया में श्रोता के यह विचार है कि अपने प्राणों की रक्षा के लिए उन्हें शकराज की शर्तें मान लेनी चाहिए उसका यह कहना भी था कि एक अकेली महादेवी के लिए मगध की विशाल सेना का नाश नहीं करना चाहिए।

शिखरस्वामी के यह विचार सर्वथा अनुचित है यदि कोई सम्राट अपनी पत्नी की रक्षा नहीं कर पाता तो वह सम्राट बनने के लायक ही नहीं है।

Q.10 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए :-

Downloaded From www.icsboard.org

"लेकिन यह विजय अधूरी है, सम्राट! युवराज चंद्रगुप्त और ध्रुवस्वामिनी का सबसे बड़ा बैरी अभी भी जीवित है।"

1. उपर्युक्त कथन किसने, किससे, कब और कहाँ कहा है? [2]

उत्तर : उपर्युक्त कथन देववर्मा ने मगध सम्राट रामगुप्त से शकराज खारवेल की छावनी में चंद्रगुप्त के शिविर में उस समय कहा जब चंद्रगुप्त ने अपनी योजना के द्वारा शकराज का अंत कर डाला। सम्राट रामगुप्त इस विजय को चंद्रगुप्त के जीवन की महान् विजय घोषित कर रहे थे परंतु देववर्मा इससे सहमत नहीं था। इसीलिए वह उक्त कथन कहता है।

2. वक्ता किस विजय की बात कर रहा है? यह विजय कैसे पाई गई थी? संक्षेप में लिखिए। [2]

उत्तर : वक्ता देववर्मा शकराज खारवेल पर प्राप्त की गई विजय की बात कर रहा है। सम्राट के रूप में रामगुप्त को मगध के राजसिंहासन पर पाकर शकराज का साहस बढ़ चुका था। वह जानता था कि रामगुप्त एक अकर्मण्य, कायर व नपुंसक शासक है और वह पिता समुद्रगुप्त की तरह राज्य की रक्षा नहीं कर पाएगा। उचित अवसर देखकर उसने मगध पर आक्रमण कर डाला। रामगुप्त सब ओर से घिर गया तो उसने चंद्रगुप्त से सहायता माँगी। चंद्रगुप्त ने आते ही शकराज को पराजित करने के लिए अचूक योजना तैयार की। योजना के अनुसार शकराज की छावनी में संधि की शर्तों के अनुरूप ध्रुवस्वामिनी के वेश में स्वयं चंद्रगुप्त और सामंत-पत्नियों के वेश में एक हजार शूरवीर सैनिक भेजे गए। इस प्रकार शकराज को चंद्रगुप्त तथा ध्रुवस्वामिनी मिलकर मार डालते हैं और चंद्रगुप्त का शंखनाद सुनते ही सैनिक पालकियों से निकलकर हमला कर देते हैं और विजयी होते हैं।

3. 'सबसे बड़ा बैरी' कौन है? वह सबसे बड़ा बैरी क्यों है? कारण सहित उत्तर दीजिए। [3]

Downloaded From www.icseboard.org

उत्तर : यहाँ 'सबसे बड़ा बैरी' सम्राट रामगुप्त को बताया जा रहा है। इसका कारण यह है कि रामगुप्त ने शिखर स्वामी के साथ षड्यंत्र करके चंद्रगुप्त की अनुपस्थिति में न केवल मगध के राजसिंहासन पर अधिकार किया बल्कि चंद्रगुप्त की मंगेतर ध्रुवस्वामिनी से बलपूर्वक विवाह भी कर लिया था। सेनापति ने महामंत्री सोमनाथ का वध करके सेनापति के साथ महामंत्री का पद भी हथिया लिया। उसने सम्राट समुद्रगुप्त की बीमारी की सूचना युवराज चंद्रगुप्त को नहीं दी। रामगुप्त की इसी कायरता व अन्याय के कारण देववर्मा उसे सबसे बड़ा बैरी मानता है।

4. 'सबसे बड़ा बैरी' कब और किस तरह मारा जाता है? समझाकर लिखिए। [3]

उत्तर : जब देववर्मा अपने संबोधन में चंद्रगुप्त को 'युवराज' और ध्रुवस्वामिनी को 'देवी' कहता है तो रामगुप्त अत्यंत क्रोध में आ जाता है। उसे 'युवराज' तथा 'देवी' संबोधन से देववर्मा का भाव समझ में आ जाता है। वह देववर्मा को बंदी बनाने का आदेश देता है जिसे चंद्रगुप्त विफल कर देता है। उधर ध्रुवस्वामिनी रामगुप्त की पत्नी होने से इंकार कर देती है क्योंकि वह विवाह उसकी इच्छा के विरुद्ध हुआ था और उसे वह विवाह नहीं अपितु अन्याय मानती है। रामगुप्त क्रुद्ध होकर ध्रुवस्वामिनी पर तलवार लेकर टूट पड़ता है। देववर्मा बीच में आकर वार को टालता है। अचानक रामगुप्त चंद्रगुप्त पर तलवार चलाकर उसे घायल कर देता है। इससे देववर्मा का क्रोध चरम पर पहुँच जाता है और वह रामगुप्त को पूरी शक्ति के साथ कंधे से लेकर छाती तक चीर कर उसका अंत कर देता है।

Downloaded From www.icseboard.org

Q.11 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए :-

''महाराज राम के बल से कौन निर्भीक और निडर नहीं है? उनके प्रताप के सामने तुम्हारा प्रताप क्या है? क्या जुगनुओं का प्रकाश कभी सूर्य के प्रकाश की समानता कर सकता है। और उस प्रकाश से क्या कभी कमलिनी खिल सकती है? ऐसे व्यक्ति का प्रताप .....''

- राजरानी सीता -

लेखक - डॉ. रामकुमार वर्मा

1. प्रस्तुत कथन का वक्ता कौन है? उसने ये वाक्य किससे और कब कहा?]2[

उत्तर : प्रस्तुत कथन की वक्ता यहाँ पर सीता है।यह वाक्य सीता जी ने लंकापति रावण से कहा है। यहाँ वक्ता के रूप में सीता जी अपने पति भगवान राम के प्रताप का वर्णन कर रही हैं। उनके विचार में श्रीराम सूर्य के समान ओजस्वी तथा तेजस्वी दिव्य पुरुष हैं। सीता द्वारा इस कथन का संदर्भ यह था कि रावण दसवाँ महोत्सव मनाकर अपनी पत्नी मंदोदरी के साथ अशोक वाटिका में आकर अपने गुणों, भक्ति तथा तेज़ का बखान करने लगता है ताकि सीता जी प्रभावित होकर उसकी पत्नी बनना स्वीकार कर लें परंतु सीता जी उसे एक जुगनू तथा श्रीराम को सूर्य बताकर यह संकेत देती हैं कि श्रीराम के प्रताप के सामने रावण अत्यंत तुच्छ है। श्रीराम के सामने रावण उतना ही निस्तेज होगा जितना सूर्य के तेज के सामने जुगनू होता है। इस प्रकार वे अपने पति की स्तुति तथा पर-पुरुष की निंदा करते हुए उसे यह संकेत देती

Downloaded From www.iseboard.org

हैं कि वह इस प्रकार के किसी भी प्रयोजन द्वारा उसे हासिल नहीं कर पाएगा।

2. वक्ता ने 'जुगनुओं का प्रकाश' एवं सूर्य के प्रकाश की तुलना किससे और क्यों की है? संक्षेप में लिखिए। [2]

उत्तर : जुगनू एक प्रकार का कीट है जो रात्रि के समय जब अपने पंखों को फैलाता है तो वह चमकता-सा प्रतीत होता है।यहाँ वक्ता के रूप में सीता जी लंकापति रावण को स्पष्ट करना चाहती हैं कि उसकी सत्ता उनके पति श्रीराम के सामने उसी प्रकार की है जिस प्रकार सूर्य के सामने जुगनू की होती है। उनके प्रभु राम सूर्य के समान तेजस्वी, ओजस्वी, प्रतापी व प्रचंड हैं। रावण अपने गुणों का बार-बार बखान करके उन्हें प्रभावित करना चाहता है तो वे अपने प्रभु राम के गुणों का वर्णन इस प्रकार के उदाहरण से करती हैं। श्रीराम के दिव्य व तेजस्वी स्वरुप के सामने रावण एक क्षुद्र प्राणी से बढ़कर कुछ भी नहीं है।

3. वक्ता, श्रोता के किस अपमानजनक कार्य के लिए उसे लज्जित करता है? अपमानजनक कार्य में श्रोता की मुख्य रूप से किसने और प्रकार सहायता की थी? समझाकर लिखिए। [3]

उत्तर : वक्ता सीता यहाँ पर रावण को उसके घृणित कार्य अर्थात् उसका अपहरण करने की भर्त्सना करते हुए कहती है कि उसने एक चोर और भिक्षुक की भांति आकर अकेली स्त्री का हरण किया यहाँ तक कि उसके इस भिक्षा माँगने वाले वेश ने समस्त भिक्षुकों का अपमान कर दिया है ।

इस कार्य में उसकी सहायता स्वयं उसके मामा मारीच ने की थी। सीता हरण की उद्देश्य की पूर्ति के लिए वह अपने मामा मारीच को सोने का मृग बनाकर पंचवटी के आसपास घूमने के - लिए कहता है ताकि उसे सीता देखे और प्रभु श्रीरामचंद्र से उसकी

Downloaded From www.cbseboard.org

माँग करे। और अंत में यही सोने का मृग सीता के हरण का कारण बनता है।

4. वक्ता का परिचय देते हुए उनके चरित्र की मुख्य दो विशेषताएँ लिखिए। [3]

उत्तर : अयोध्या के युवराज राम की पत्नी हैं। वे एक पतिव्रता स्त्री हैं जो अपने पति को वनवास की आज्ञा मिलने पर उनकी अनुचरी बनकर साथ चल पड़ती हैं। राजसी ठाठ-बाठ में पली होने पर भी वे वन तथा काँटों भरे मार्गों से नहीं घबराती। उनके मन में केवल प्रभु श्रीराम के दर्शन तथा उनके श्रीचरणों की सेवा का भाव समाया हुआ है। वे एक ऐसी दृढ़ स्त्री हैं जो केवल अपने पति के प्रति समर्पित रहती हैं। लंकापति रावण की अशोक वाटिका में रहते हुए उन्हें अनेक प्रलोभन, भय, छल, बल आदि दिखाए जाते हैं परंतु वे इंचमात्र भी विचलित नहीं होतीं।वे एक निर्भीक स्त्री हैं जो रावण तथा उसके किसी भी प्रकार के आतंक से भयभीत नहीं होतीं। उनमें अपनी बात कहने का साहस है। वे धर्म तथा नीति जानती हैं। उन्हें भारत की श्रेष्ठ साधनाओं का ज्ञान है। वे श्रेष्ठ सामाजिक मूल्यों का सम्मान करती हैं।

Q.12 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow:

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए :

"नहीं, वह ठोकर इसलिए खाता है कि आँखों वाला पास खड़ा व्यक्ति उसे सहारा नहीं देता, उसे सहारा देने से कतराता है। हम भी जब अंधे हो जाते हैं तो चाहते हैं आस-पास से रस की दो बूँदे हमें मिल जाएँ। सच नीरू, ये रस की बूँदे प्यार की बूँदे हैं जो जीवन के सारे अँधेरे को अंदर तक पोंछ डालती हैं और हमारी जिदंगी तब उजालों में नहा सकती है।"

-भटकन-

Downloaded From www.icseboard.org

1. प्रस्तुत कथन का वक्ता कौन है? तथा श्रोता का संक्षिप्त परिचय दीजिए।]2[

उत्तर : प्रस्तुत कथन का वक्ता मनुज है। यहाँ पर मनुज और नीरू भाई-बहन है। मनुज नीरू से छोटा है जो स्कूल में पढ़ता हैं। उसे माता-पिता के नौकरी पर चले जाने के कारण घर में अकेलापन महसूस होता है। वह जब-तब बिना बताए साइकिल उठाकर घर से बाहर चला जाया करता है। उसके स्वभाव में भटकन आ चुकी है।

नीरू - नीरू बड़ी है। वह कॉलेज में पढ़ती है। वह स्वतंत्र विचारों की पक्षपाती है। उसे घर में अकेलापन महसूस होता है तो वह अपने आप को कॉलेज के सांस्कृतिक कार्यक्रमों की ओर मोड़ लेती है।

2. अंधा ठोकर क्यों खाता है? इस वाक्य के माध्यम से वक्ता क्या कहना चाहता है? [2]

उत्तर : 'अंधा ठोकर क्यों खाता है' से मनुज का आशय विवेक के कुंठित हो जाने से है। जब किसी पर इतने आदेश थोप दिए जाते हैं, पग-पग पर हस्तक्षेप किया जाता है, तो व्यक्ति अपने को दबा-दबा महसूस करता है तथा उसका अंतर्मन रिवोल्ट करने लगता है तथा भटक जाता है और उसका विवेक अंधा हो जाता है।

3. रस की बूँदो का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए। वक्ता की बूँदे क्यों चाहता है? समझाकर लिखिए।]3[

उत्तर : रस की बूँदो का तात्पर्य यहाँ पर स्नेहपूर्ण व्यवहार से है। 'रस की बूँदों' का प्रयोग वक्ता मनुज के स्नेहपूर्ण व्यवहार की आशा से

Downloaded From www.icseboard.org

है। मनुज के अनुसार जब युवकों से अधिक टोका-टाकी की जाती है तथा बात-बात में हस्तक्षेप किया जाता है, तो युवक प्रतिक्रिया स्वरूप अनुशासनहीन हो जाते हैं। भटक जाते हैं और इस भटकन का कोई अंत नहीं होता। ऐसी स्थिति में युवक माता-पिता के स्नेह से भरे व्यवहार तथा दो शब्दों के भूखे होते हैं, जिससे उनके अशांत एवं भटके हुए मन को कुछ राहत मिल सके।

4. 'हमारी जिन्दगी तब उजालों में नहा सकती है।' कथन के आधार पर वक्ता के भाव स्पष्ट कीजिए।]3[

उत्तर : 'घर का अकेला लड़का' मनुज है। वह प्रस्तुत कथन अपनी बहन नीरू से कह रहा है। इस कथन का कारण यह है कि उसे माता-पिता के नौकरी पर चले जाने के कारण घर में अकेलापन महसूस होता है। वह अपने घर-परिवेश में अपनापन, प्यार व सहानुभूति की कमी महसूस करता है। वह जब-तब बिना बताए साइकिल उठाकर घर से बाहर चला जाया करता है। उसे पूछने वाला कोई नहीं है।

Q.13 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए :-

"हाँ, पूछते थे, मैंने कह दिया कि बच्चा है, पर माँ की मौत के बाद उसकी हालत ठीक नहीं रहती, परमात्मा ही मालिक है।"

- लक्ष्मी का स्वागत -

लेखक - उपेन्द्रनाथ 'अश्क'

1. उक्त वार्तालाप किनके बीच कब हो रहा है? संक्षेप में लिखिए। [2]

उत्तर : उक्त वार्तालाप रोशन के माता-पिता के बीच हो रहा है। उक्त संवाद का संदर्भ रोशन के दूसरे विवाह के सगुन को लेकर है। यहाँ

Downloaded From www.icseboard.org

पर रोशन की माँ को रोशन के दूसरे विवाह की चिंता सता रही है कि कहीं लड़कीवाले रोशन की पूर्व पत्नी और बेटे के बारे में जानकर विवाह न करें इसलिए यही बात वह रोशन के पिता से जानना चाहती है और यदि सब कुछ ठीक ठाक है तो वे तुरंत रोशन के विवाह का सगुन लेने की बात करती हैं।

2. श्रोता कौन है? उसके अनुसार बीमार बच्चे की माँ की मृत्यु किस प्रकार हुई? [2]

उत्तर : यहाँ पर श्रोता रोशन की माँ है। श्रोता के अनुसार बीमार बच्चे की माँ की मृत्यु जिगर का बुखार होने के कारण हुई।

3. ऐसी विषम परिस्थितियों में वक्ता द्वारा अपने पुत्र रोशन का शगुन लेना कहाँ तक उचित है? अपने विचार व्यक्त कीजिए। [3]

उत्तर : ऐसी विषम परिस्थितियों में वक्ता द्वारा अपने पुत्र रोशन का शगुन लेना सर्वथा अनुचित है। सुरेंद रोशन की माताजी को समझाता भी है कि रोशन का बेटा अरुण गंभीर रूप से बीमार है। ऐसे में उसकी दूसरी शादी का शगुन लेना उचित नहीं होगा। फिर भी उसके माता-पिता अपनी लोभी वृत्ति के कारण इतनी बड़ी बात को नजरंदाज कर बस रोशन की शादी का शगुन लेने के जल्दी में रहते हैं और पोते की मृत्यु पर शोक करने के बजाय शगुन लेकर लक्ष्मी का स्वागत करते है। इसलिए उनका यह कदम सर्वथा अनुचित और अमानवीय है।

4. एकांकी का उदहारण देते हुए उद्देश्य लिखिए। [3]

उत्तर : प्रस्तुत एकांकी का उद्देश्य आज के मशीन युग की भौतिकतावादी सोच और लोगों के मन-मस्तिष्क पर छाये लोभ के पर्दे को

Downloaded From www.icseboard.org

दिखाना है। इसमें बताया गया है कि लालच मनुष्य की मनुष्यता को मार देती है। वह विवेकहीन हो जाता है। उसे अच्छा बुरा-फर्क भी दिखाई नहीं देता। इस एकांकी में भी रोशन के माता पिता-पोते की मृत्यु पर शोक करने के बजाय रोशन की दूसरी शादी का शगुन लेकर लक्ष्मी का स्वागत करते है। अतः प्रस्तुत एकांकी का उद्देश्य यहाँ पर मनुष्य के इसी लालच को उजागर कर समाज की घृणित दहेज़ प्रथा से हमें सचेत करना है।

काव्य - चन्द्रिका

Q.14 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए :-

बगिया हरी-हरी, वसुंधरा भरी-भरी
फिर क्यों रहे मनुष्य की दशा मरी-मरी
फैले कुटी-कुटी महल-महल, तरी-तरी
घर में बिरादरी, समाज में बराबरी
ऐसा न हो कि कोटि-कोटि ही दुखी रहें-
तुम वेदना हरो, उदार वेदना हरो,
तुम वेदना हरो।
बढ़ती चले कतार देश की पुकार पर
धुन छेड़ दो नई, समष्टि के सितार पर
पीछे किया करो सिंगार द्वार-द्वार पर
पहले जले दिया शहीद के मजार पर
वे देश पर चढ़ा गए शरीर फूल सा-
तुम वन्दना करो, कृतज्ञ वन्दना करो,
तुम वन्दना करो।

Downloaded From www.icsboard.org

- नवीन कल्पना करो -

कवि- गोपाल सिंह नेपाली

1. बगिया हरी-हरी तथा वसुन्धरा भरी-भरी का मनुष्य की दशा से क्या सम्बन्ध है? [2]

उत्तर : प्रस्तुत पद्यांश में कवि हमारे देश की विस्तृत प्राकृतिक संपदा की प्रशंसा करते हुए कहता है कि हमारी धरती हरी-भरी तथा उपजाऊ है,जिसमें हर प्रकार के अनाज, फल और फूल पैदा होते हैं। इतना ही नहीं हमारी धरती अनेक प्रकार के खनिजों से भरी हुई है। कवि के कहने का तात्पर्य यह है कि जब हमारा देश हर तरह से साधन-संपन्न देश है तो फिर मनुष्य की दशा यहाँ पर मरियल जैसी क्यों है।

2. कवि को किस दुख की चिन्ता है? कवि अपने इस दुख को दूर करने के लिए किससे क्या कह रहा है? [2]

उत्तर : प्रस्तुत पद्यांश में कवि आम आदमी के दुःख की बात कर रहा है। कवि यह इसलिए कह रहा है क्योंकि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ऐसा न हो कि आम आदमी की स्थिति में कोई सुधार न हो और केवल कुछ लोग सुविधा-संपन्न और खुशहाल होते जाए। कवि को यहाँ पर देश की सामाजिक और आर्थिक स्थिति की चिंता है। कवि अपने इसी दुःख को दूर करने के लिए देशवासियों से कह रहा है।

3. अपने द्वार को सजाने से पहले कवि क्या करने को कह रहा है? हमें किन लोगों के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए तथा क्यों? समझाकर लिखिए। [3]

उत्तर : द्वार सजाने से पहले कविता में शहीदों के प्रति कृतज्ञता दर्शाने के लिए कहा गया है कवि यहाँ कहना चाहता है कि अपने-अपने घर की सजावट से पहले हमें उन शहीदों की मजार पर जाकर दीपक जलाने चाहिए क्योंकि इन्हीं के कारण आज हम स्वतंत्रता की खुली हवा में साँस ले रहें हैं।

Downloaded From www.icseboard.org

4. प्रस्तुत कविता का मूलभाव लिखिए। [3]

उत्तर : प्रस्तुत कविता कवि 'गोपाल सिंह' 'नेपाली' की राष्ट्र हित में लिखी गई कविता है। प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि ने देशवासियों से देश की स्वतंत्रता को सँभाल कर रखने के लिए कहा है। हमें अपने व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर जातिगत भेदभाव को भूलकर देश की एकता को बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए। अपने देश पर संकट की स्थिति उत्पन्न होने पर उसका डटकर मुकाबला करना चाहिए। अत:राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए सभी को अपने-अपने सामर्थ्य अनुसार कार्य करना चाहिए।

Q.15 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए :

आगे चले बहुरि रघुराया। रिष्यमूक पर्बत निअराया।।
तहँ रह सचिव सहित सुग्रीवा। आवत देखि अतुल बल सींवा।।
अति सभीत कह सुनु हनुमाना। पुरुष जुगल बल रूप निधाना।।
धरि बटु रूप देखु तैं जाई। कहेसु जानि जियँ सयन बुझाई।।
पठए बालि होहिं मन मैला। भागौं तुरत तजौं यह सैला।।
बिप्र रूप धरि कपि तहँ गयऊ। माथ नाइ पूछत अस भयऊ।।
को तुम्ह स्यामल गौर सरीरा। छत्री रूप फिरहु बन बीरा।।
कठिन भूमि कोमल पद गामी। कवन हेतु बिचरहु बन स्वामी।।
मृदुल मनोहर सुंदर गाता। सहत दुसह बन आतप बाता।।
की तुम्ह तीनि देव मँह कोऊ। नर नारायन की तुम्ह दोऊ।।

- राम-सुग्रीव मैत्री -
कवि- तुलसीदास

Downloaded From www.icsebard.org

1. सुग्रीव किस पर्वत पर, किसके साथ तथा क्यों रहता था? [2]

उत्तर : सुग्रीव ऋष्यमूक पर्वत पर अपने मंत्री हनुमान के साथ रहता था। सुग्रीव अपने भाई बालि के डर के कारण उस पर्वत पर रहता था।

2. सुग्रीव क्या देखकर भयभीत हो गए थे? उन्होंने हनुमान जी से क्या कहा? [2]

उत्तर : सुग्रीव ने जब ऋष्यमूक पर्वत पर से दो अति बलशाली वनवासी पुरुषों को देखा तो सुग्रीव भयभीत हो उठा। उसके भयभीत होने का कारण यह था कि वह अपने भाई बालि से के डर से इस पर्वत पर छिपा बैठा था। इन दो वनवासी पुरुषों को देखकर उसे लगा कि यह उसे मारने के लिए शायद उसके भाई बालि के द्वारा भेजे गए हैं।

उन्होंने हुनमान को उन दोनों के पास जाने की सलाह दी और उन दोनों के बारे में पूरी जानकारी लाने के लिए कहा। जिससे वह समय रहते अपना बचाव कर सके।

3. बालि कौन था? वह ऋष्यमूक पर्वत पर क्यों नहीं जाता था? उससे सुग्रीव क्यों भयभीत था? [3]

उत्तर : बालि सुग्रीव का बड़ा भाई था। बालि को शाप मिलने के कारण वह ऋष्यमूक पर्वत पर नहीं जा सकता था।

सुग्रीव और बालि एक बार एक राक्षस के पीछे एक गुफा तक पहुँचते हैं।बालि उस राक्षस को मारने के लिए अंदर चला जाता है और सुग्रीव से वहीं इंतजार करने के लिए कहता है परन्तु गुफ़ा से जब सुग्रीव खून की धार को बहते देखता है तो उसे लगता है कि उसका भाई मारा गया है और वह उस गुफा के मुहाने पर एक बड़ी शिला रख आता है जिससे की वह राक्षस बाहर न आ सके।और इसी वजह से दोनों भाई में मनमुटाव हो जाता है बालि

Downloaded From www.icsepboard.org

को लगता है कि उसके भाई ने जान-बूझकर उसे मारने के लिए वह शीला रखी थी इसलिए राक्षस को मारने के बाद बालि जब अपने सिहांसन पर अपने भाई सुग्रीव को देखता है तो वह अत्यंत क्रोधित हो उठता और उसे मारकर राज्य से बाहर कर देता है तब से सुग्रीव अपने भाई के डर से ऋष्यमूक पर्वत पर छिपकर रहता है और उससे सदा भयभीत रहता है ।

4. सुग्रीव ने हनुमान से क्या कहा? हनुमान ने सुग्रीव की आज्ञा का पालन किस प्रकार किया तथा उन्होंने आगन्तुक से क्या प्रश्न पूछे? [3]

उत्तर : सुग्रीव ने जब अपनी ओर आते हुए दो बलवान पुरूषों को देखा तब अपने भय को मिटाने के लिए उन्होंने हुनमान को उन दोनों के पास जाने की सलाह दी और उन दोनों के बारे में पूरी जानकारी लाने के लिए कहा।जिससे वह समय रहते अपना बचाव कर सके।

सुग्रीव के कहने पर हनुमान बटु रूप धर कर आगंतुक के पास पहुँचते हैं। हनुमान उनसे प्रश्न पूछते हैं कि गोरे और श्यामल शरीर वाले वे दोनों पुरुष कौन हैं और किस कारणवश वे इस भयानक जंगल में भटकते हुए धूप और आँधियों के प्रकोप को झेल रहे हैं।

Q.16 Read the extract given below and answer in Hindi the questions that follow :

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए :-

मेरा मन तो हरा हो गया इन्हें निरख कर,
दोनों का यह रुचिर रूप नयनों से चखकर।
और अधिक के हेतु समुत्सुक हूँ मैं मन में
ये दोनों जड़ विटपी यहाँ इस विरल विजन में।
भेंट रहे है एक दूसरे को खिल-खिल कर

Downloaded From www.iosboard.org

निज-निज सीमा लाँघ सहोदर-से हिल-मिलकर।
इसकी शाखा लिये कनक कुसुमों की डाली,
उसके कर में मधुर फलों की भेंट निराली ।
पुलकान्दोलित पत्र परस्पर की छाया में,
छाया भी अविभिन्न परस्पर की माया है।

- सम्मिलित -
कवि 'हरिऔध' अयोध्यासिंह उपाध्याय -

1. 'मेरा मन तो हरा हो गया' से कवि का क्या तात्पर्य है? कवि का मन हरा क्यों हो गया था? [2]

उत्तर : 'मेरा मन तो हरा हो गया' से कवि का यहाँ तात्पर्य आपसी प्रेम और भाईचारे से है।
दोनों पेड़ों को निरख कर कवि का मन खुश हो गया क्योंकि एक सुनहरे पुष्पों से भरा था तो दूसरा रसीले फलों से लदा था और वे दोनों एक दूसरे से गले मिलते हुए से प्रतीत हो रहे थे। उनकी टहनियाँ एक दूसरे से मिली थीं और उनकी छाया भी अभिन्न थी।

2. कौन भेंट रहे हैं? कविता के सन्दर्भ में स्पष्ट कीजिए।]2[

उत्तर : अमलतास तथा आम का एक दूसरे से गले मिलते हुए से प्रतीत हो रहे थे। उनकी टहनियाँ एक दूसरे से मिली थीं और उनकी छाया भी अविभिन्न थी। जैसे दो भाई गले मिल रहे हो।यहाँ पर ये दोनों पेड़ दस वर्ष पूर्व मारे गए भाइयों की एक तरह से पुनर्जन्म की कथा को बता रहें हो कि किस तरह एक छोटे से भूमिखंड को लेकर दोनों का आपस में झगडा होकर मृत्यु होती है और ठीक उसी जगह पर धरती की गोद से उसी दुश्मनी का रक्त पीकर दो अंकुरों का जन्म होता है।इस प्रकार कवि ने इन दो पेड़ों के माध्यम से हिल-मिलकर रहने की भावना को सराहा है।

Downloaded From www.icseboard.org

3. 'छाया भी अविभिन्न परस्पर की माया है।' पंक्ति का भावार्थ लिखिए। कवि ने उक्त पंक्ति के द्वारा क्या संकेत दिया है? [3]

उत्तर : 'छाया भी अविभिन्न परस्पर की माया है' का भावार्थ यह है कि वे दोनों पेड़ परस्पर बड़े हो सद्भाव से रह रहे थे।वे दोनों एक-दूसरे में इतने हिल-मिल गए थे कि दोनों की परछाईं भी एक ही थी।उक्त पंक्ति द्वारा कवि यही संकेत दिया है कि लड़ाई और झगड़ों से किसी को लाभ नहीं होता है इसके विपरीत परस्पर प्रेम और सद्भाव से अपना तथा समाज सभी का कल्याण होता है।

4. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए :- [3]

रुचिर, समुत्सुक, विटपि, सहोदर, पुलकान्दोलित, परस्पर।

उत्तर - रुचिर - मनोरम

समुत्सुक - उत्सुकता

विटपि - वृक्ष

सहोदर - भाई

पुलकान्दोलित - खुशी से रोमांचित होना

परस्पर - आपस-में।

Downloaded From www.icseboard.org

Whatsapp @ 9300930012
Send your old paper & get 10/-
अपने पुराने पेपर्स भेजे और 10 रुपये पायें,
Paytm or Google Pay से